ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.4, Oct. – Dec., 2024/60

संत एवं वैष्णव सम्प्रदाय

अखिलेश कुमार त्रिपाठी, रेखा श्रीवास्तव एवं राघवेन्द्र पाण्डेय
https://doi.org/ 10.61410/had.v19i4.215

संत किसे कहते हैं? संत की क्या व्याख्या है? संत की क्या परिभाषा है? यह प्रश्न सभी के अन्दर उठता है।

साधु चरित सभु चरित कपासू।
निरस बिसद गुनमय फल जासू।।[1]

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरित मानस में संत को कपास की तरह बताया है और कहा है संत का जीवन कपास की तरह है, संत का चरित्र कपास के समान शुभ है, जिसका फल विशद, नीरस और गुणमय होता है।

संत भेष से नहीं बल्कि बुद्धि उत्तम विचार से होता है जिसमें मानव कल्याण की भावना हो वही संत है। संत शब्द की उत्पत्ति शान्त या सत्य से मानी गयी है।[2]

साधारण भाषा में कहा जाय तो संत शब्द का प्रयोग सदाचारी पुरुष जिसमें जगत कल्याण की भावना हो, जो पवित्रात्मा हो के लिए किया जाता है। कभी–कभी साधु महात्मा का पर्याय संत को समझा जाता है। संत उसे कहते हैं जिसके अज्ञान का नाश हो गया हो।[3]

जिनके घर सन्तों का आगमन होता है, जिसके ऊपर सन्तों की कृपा हो जाय, उसे संसार में कोई भी बाधा व्याप्त नहीं होती है।[4]

सन्तों का स्वभाव ही परोपकार का होता है।[5]

जगद्गरु श्री अवधेशाचार्य जी महाराज, राघवाश्रम, श्रीअयोध्या धाम के अनुसार '' जब मनुष्य के कई जन्मों के पुण्यों का फल जगता है तब संत उस मनुष्य के दरवाजे पर पहुँचकर उसकी कुण्डी खटखटाता है।''

प्रथम भगति कहउँ तोहि पाहीं।
सावधान सुनु धरु मन माहीं।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।
दुसरि रति मम कथा प्रसंगाा।।[6]

भगवान श्रीराम ने माता शबरी को नवधा भगति के बारे में सर्वप्रथम भक्ति के मार्ग में सन्तों की संगति करने को कहा है।

जब दिलीप के पुत्र भगीरथ माता गंगा को अपने पूर्वजों को तारने के लिए पृथ्वी पर लाने के लिए प्रार्थना किया तो माता गंगा ने भगीरथ से कहा मेरे वेग को कौन धारण करेगा? दूसरे संसार के प्राणी मुझमें स्नान करके अपने पाप छोड़ेगें, मुझे पापी बना देंगें, मैं पृथ्वी पर नहीं जाऊंगी। तब भगीरथ ने बोला हे माता! पुण्यात्मा, साधु, सन्त जब आप में स्नान करेंगे तो मनुष्य द्वारा छोड़े गए सारे पाप नष्ट हो जायेंगे। दिलीप के पुत्र भगीरथ ने शंकर जी की तपस्या करके उन्हें प्रसन्न करके गंगाजी को पृथ्वी पर अपने पूर्वजों को तारने के लिए राजी कर लिया।[7]

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, टी0एन0पी0जी0 कालेज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर।
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय पी0जी0 कालेज, मुसाफिरखाना, अमेठी।
शोधार्थी समाजशास्त्र, टी0एन0पी0जी0 कालेज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर।

संत उन्हें कहा जाता है जो स्वर्ग की कामना, वित्तैष्णा, पुत्रैष्णा, लोकैष्णा, सामाजिक प्रतिष्ठा, यश की कामना को त्यागकर आध्यात्मिकता में संलग्न रहकर अनुष्ठानों के माध्यम से जगत कल्याण के लिए सतत् लगे रहते हैं। संत अपने दीर्घ जीवन की कामना का परित्याग करके पवित्र जीवन की अभिलाषा रखते हैं। संत शब्द सत् शब्द के कर्त्ता कारक का बहुवचन है इसका अर्थ है– साधु, सन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष या महात्मा होता है। ईश्वर के भक्त या धार्मिक पुरुष को भी संत कहा जाता है। संत का अर्थ है, स्वयं का अन्त अर्थात स्वयं के होने के बोध का अन्त और ईश्वर में सभी को देखना और सभी में ईश्वर को देखने का बोध करने वाले को ही सन्त कहते हैं। संतों में पांच विकार, क्रोध, काम, मद, मोह, लोभ इन सभी का अभाव रहता है। संत इन पांच विकारों को पाप का मार्ग समझते हैं और इन पांच विकारों से मुक्त होते हैं।

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू।।[8]

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में संतों को चलता–फिरता तीर्थराज प्रयाग कहा है और कहा है संतों का समाज आनन्द और कल्याणमय है।

संतों का लक्ष्य भजन करना, समाज की सेवा करना, समाज का कल्याण, कर्म करते रहना पर चिंतन ईश्वर का करना, ईश्वर को प्राप्त करना है।

संत संभु श्रीपति अबादा। सुनिअ जहाँ तहँ असिमरजादा।।
काटिय तासु जीभ जो बसाई। श्रवण मूदि न त चलिअ पराई।।[9]

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं जहाँ सन्त, शिवजी और विष्णु भगवान की निंदा सुनी जाय वहां ऐसी मर्यादा होनी चाहिए कि वहां अपना वश चले तो निंदा करने वाले की जीभ काट ले या वहाँ से अपना कान मूंद कर भाग जाय। यहां तुलसीदास जी ने संत को सबसे आगे रखा है, महादेव और श्रीहरिविष्णु से भी पहले। यह प्रसंग माता सती जब अपने पिता ब्रह्मा के पुत्र दक्ष प्रजापति के यहाँ यज्ञ आहुति में बिना आमंत्रण जाने पर श्रीशिवजी की निंदा आपने पिता द्वारा सुनती हैं ऐसा प्रसंग आया है। जो नित्यसिद्ध वस्तु, सत्यस्वरुप का साक्षात्कार कर चुके हैं अथवा अपरोक्ष रूप से उपलब्ध कर चुके हैं ओर इस उपलब्धि के फलस्वरूप अखण्ड सत्यस्वरूप में प्रतिष्ठित हो गये हैं व ही सन्त हैं। सत्य ही चैतन्य स्वरूप है और चैतन्य ही आनन्द स्वरूप है अतएव यह कहना नहीं होगा कि जो सत्य में प्रतिष्ठित हो गये हैं वे ही सन्त हैं।[10]

जो भगवान का स्वरूप है वही संत का स्वरूप है। जिसमें सब हैं जो सबसे अलग है, जिसमें अत्यन्ताभाव है वही सन्त है, उसे ईश्वर, जगत कहो या ब्रह्म कहो एक ही बात है। [11]

जिसके व्यवहार में सच्चिदानन्द और परमार्थ की भावना हो वही सन्त है। सन्त की उपासना ईश्वर, ब्रह्म की उपासना है।

साधुनां दर्शनं लोके सर्वसिद्धि करं परम्।
साधु ऐसा चाहिए जैसे सूप सुहाई
सार सार को गहि रहै थोथा देई उड़ाई।।[12]

सन्तों का एक मत है, एक समाज है, एक सम्प्रदाय है।

1– वैष्णव सम्प्रदाय

2– शैव सम्प्रदाय

3– शाक्त सम्प्रदाय

4– गणपत्य सम्प्रदाय

हर सम्प्रदाय की अपनी–अपनी एक विशेषता है, एक विचार है, एक उद्देश्य है, एक पहचान है, तिलक लगाने की एक पद्धति है। सन्त अपने–अपने सम्प्रदाय से ही पहचाने जाते हैं।

वैष्णव सम्प्रदाय

वैष्णव सम्प्रदाय के सन्त विष्णु को अपना इष्ट मानकर उनकी आराधना करते हैं।

वैष्णव सम्प्रदाय में तीन अखाड़े हैं।

1–दिगम्बर

2–निर्मोही

3– निर्वाणी

वैष्णव सम्प्रदाय का अर्थ है– भगवान श्रीहरि विष्णु के प्रति अपनी असीम श्रद्धा अनुराग का होना। ऋग्वेद में विष्णु का यज्ञीय स्परूप कहा गया है और श्रीहरि विष्णु को इसलिए यज्ञीय पुरूष, योगेश्वर कहा जाता है।[13] वैदिक युग में श्रीहरि विष्णु को एक देवता के रूप में माना जाता है। आज वैष्णव सम्प्रदाय का जो स्वरूप है वह बहुत कुछ वैष्णव भक्ति आन्दोलन का परिणाम है। जिनका नेतृत्व तमिल में वैष्णव भक्तों अलवारों ने ईसा की 66 वीं शताब्दी तक किया था।[14] यह युग आरम्भ होता है आलवार संतों से और समाप्त होता है वैष्णव आचार्यों से। वैष्णव संतों का सामान्य नाम आलवार है, इस तमिल शब्द का अर्थ है, भगवत भक्ति रस में लीन। इस काल में विष्णु भक्ति की बाढ़ आ गई थी, भक्तों की संख्या की कोई गणना नहीं था। स्त्री–पुरूष ब्राह्मण–शुद्र सभी संतों के व्यक्ति भगवान के भक्ति रस में डूबे हुए थे। सभी संतों को भगवान के दरबार में प्रवेश पाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। आलवार लोग भगवान के भक्त थे। उन्होंने इस सत्य का उद्घाटन किया की भगवान के दरबार में प्रवेश पाने का सबको अधिकार है।[15] इस युग में वैष्णव सम्प्रदाय हैं जो निम्नलिखित हैः–

1– श्री विष्णु स्वामी सम्प्रदाय

इसका प्रवर्तन जगद्गुरू श्री विष्णु स्वामी जी द्वारा आज से 2700 वर्ष पूर्व अर्थात् ईसा से 700 वर्ष पूर्व किया गया था। भगवान श्री कृष्ण के बालस्वरूप गोपाल के उपासक थे। इसी श्रंखला में वल्लभाचार्य सम्प्रदाय की प्रतिष्ठित है जिसके प्रवर्तक बल्लभचार्य जी हैं।

2– इसे विशिष्टाद्वौत वेदान्त कहा जाता है इसके प्रवर्तक स्वामी रामानुज जी हैं जिनका काल 1037 से 1137 ई0 माना जाता है। आप भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं।

3– **निम्बार्क सम्प्रदाय**

इसे द्वैताद्वैत वेदान्त कहा जाता है इसके प्रवर्तक स्वामी निम्बार्काचार्य जी हैं। इनके काल में दो विचारधाराएँ प्रचलित है। प्रथम धारा इनका काल 12 वीं शताब्दी मानती है जबकि दूसरी धारा इनका काल 14 वीं शताब्दी मानती हैं।

4– माध्वाचार्य सम्प्रदाय

इसे द्वैत वेदान्त कहा जाता है इसके प्रवर्तक स्वामी माध्वाचार्य जी हैं जिसका काल 1199 से 1303 ई0 माना जाता है। वैष्णव काव्य का उदय जनता के हृदय को स्पर्श करने के लिए प्रान्तीय भाषाओं को अपने उपदेशों का माध्यम बनाया है।

इस समय भक्ति आन्दोलन तथा वैष्णव सम्प्रदाय अब वास्तविक अर्थों में जनता का वैष्णव धर्म बन गया।[16]

वैष्णव सम्प्रदाय में तिलक लगाने के बहुत ज्यादा प्रकार मिलते हैं वैष्णवों में लगभग 64 प्रकार के तिलक लगाये जाते हैं–

– लालश्री तिलक, इस तिलक के आस–पास चंदन का तिलक लगाकर उसके बीच में हल्दी या कुमकुम की रेखा बनाई जाती है।

– विष्णु स्वामी तिलक, अपने माथे पर इस तिलक को लगाने के लिये भौहों के बीच में दो चौड़ी रेखाएं बनाई जाती हैं।

– रामानन्द तिलक, इस तिलक से पहले विष्णु तिलक लगाया जाता है इसके बाद उनके बीच में कुमकुम से खड़ी रेखा बनाई जाती है।

– श्यामश्री तिलक, भगवान श्रीकृष्ण के उपासक लगाते हैं, इस तिलक को लगाने के लिये आसपास गोपीचंदन की व बीच में एक काले रंग की मोटी रेखा बनाई जाती है।

– अन्य तिलक, इस सबके अलावा भी और भी प्रमुख तिलक है जो केवल सन्त लोग लगाते हैं, बहुत से साधु–सन्त भस्म का तिलक लगाते हैं।

मान्यता है कि तिलक वैष्णवों और शैवों में एकता का भी प्रतीक माना जाता है, माना जाता है कि वैष्णव भगवान शंकर का त्रिशूल रूप में मस्तक पर लगाया जाता है। शैव सम्प्रदाय के लोग भगवान श्रीराम के धनुष को तिलक के रूप में धारण करते हैं।[17]

मत्स्यपुराण में विदित है कि ब्राह्मण ग्रंथ और वेदों के शब्द ये देवताओं की निर्देशिका मूर्तियां हैं जिनके अंतःकरण में इनके और ब्रह्म का संयोग बना रहता है वह संत कहलाते हैं। संत सत्य के शोधक होते हैं। समाज ही उनकी यथार्थ, कार्यशाला, प्रयोगभूमि होता है।[18]

विष्णु की और उनके अवतारों की चर्चा ब्राह्मण ग्रंथों में पंचदेवों के साथ मिलती है। भगवान श्रीहरि विष्णु को अपना इष्टदेव और परमात्मा के रूप को मानने वालों को ही वैष्णव कहा जाता है।

विष्णु से सम्बन्धित धर्म–दर्शन और सिद्धान्त को वैष्णव सम्प्रदाय कहा जाता है।[19]

संदर्भग्रंथ सूची

1– श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस,गोरखपुर,बालकाण्ड,पृष्ठ,4

2– नवीनतम साहित्यिक निबन्ध पृष्ठ,56,57

3– श्रीमद्भागवत प्रवचन–पीयूष, Deep Publication, चतुर्थ स्कन्ध, पृष्ठ,108

4– श्रीमद्भागवत प्रवचन–पीयूष, Deep Publication, चतुर्थ स्कन्ध, पृष्ठ,116

5–श्रीमद्भागवत प्रवचन–पीयूष, Deep Publication, चतुर्थ स्कन्ध, पृष्ठ,117

6– श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर,अरण्यकाण्ड,पृष्ठ,543

7– श्रीमद्भागवत प्रवचन–पीयूष, Deep Publication, नवम स्कन्ध, पृष्ठ,217

8– श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस,गोरखपुर,बालकाण्ड,पृष्ठ,5

9– श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस,गोरखपुर,बालकाण्ड,पृष्ठ,62

10–प्राचीन भारत के प्रमुख वैष्णव संत एवं उनका सामाजिक योगदान,2002,पृष्ठ,2

11–प्राचीन भारत के प्रमुख वैष्णव संत एवं उनका सामाजिक योगदान, शोध प्रबन्ध,2002,पृष्ठ,10

12–श्रीमद्भागवत प्रवचन–पीयूष, Deep Publication, प्रथम दिन, पृष्ठ,11

13–ऋग्वेद, एक संस्कृत उद्धहरण पृष्ठ,71

14–वाराणसी के वैष्णव सम्प्रदाय का उद्भव एवं विकासः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, 2012, पृष्ठ,2

15–वाराणसी के वैष्णव सम्प्रदाय का उद्भव एवं विकासः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, 2012, पृष्ठ,2

16–वाराणसी के वैष्णव सम्प्रदाय का उद्भव एवं विकासः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, 2012, पृष्ठ,6–7

17–पाण्डेय,राघवेन्द्र,(2022,जून),humanitiesanddevelopment,अयोध्या एवं संत समाज पृष्ठ,77

18–पाण्डेय,राघवेन्द्र,(2022,जून),humanitiesanddevelopment,अयोध्या एवं संत समाज पृष्ठ,75

19–पुराणों में शैव एवं वैष्णव धर्म, 2006, अवधेश कुमार सिंह, शोध–प्रबन्ध, पृष्ठ,72–73